

Today's Poem – 05.07.2014

यह अनादि ड्रामा फिरता ही रहता

एक का पार्ट दूसरे से ना मिलता

ड्रामा को यथार्थ समझना

और सदा हर्षित रहना

सबको युक्ति से दो बाप का परिचय देना

एक हद का, दूसरा बेहद का बाप का बताना

इस समय ही बाप समान परफेक्ट बन पूरा वर्सा लेना

बाप की सब शिक्षाओं को स्वयं में धारण करना

बुद्धि को पारस बनाने के लिए पढ़ाई पर पूरा-पूरा ध्यान देना

निश्चयबुद्धि बन मनुष्य से देवता बनने का इम्तहान पास करना

अकल्याण के संकल्प को समाप्त करना

अपकारी पर भी उपकार करना

सर्व के प्रति कल्याण की भावना

यही है ज्ञानी तू आत्मा बनना

मेरा बाबा

ॐ शान्ति !!!

